International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 330-332

प्रेमचंद जी के साहित्य में प्रेम का विकृत रूप

देवराज
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्याकाश में प्रेमचंद का उदय एक दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में हुआ है। भारतीय संस्कृति के सच्चे वाहक के रूप में उन्होंने साहित्य सृजन किया। उनके द्वारा रचित साहित्य में प्रेम के उज्ज्वल व पवित्र पक्ष के साथ–साथ प्रेम के कलुषित व विकृत रूप का वर्णन भी यथेष्ठ रूप से हुआ है। उनके अनुसार जब प्रेमभाव में ईर्ष्या, द्वेष, कपट, छल, स्वार्थ, क्रोध आदि चरित्र के अशुभ पक्ष प्रवेश पा जाते हैं तो वे प्रेम के विकृत रूप को प्रकट कर देते हैं। विकृत प्रेम केवल शारीरिक या मानसिक स्तर पर ही रहता है तथा उसके पीछे कोई–न–कोई स्वार्थ छिपा होता है। सच्चे प्रेम में स्वार्थ नही होता। उसमें तो त्याग व बलिदान, सेवा और कर्त्तव्यनिष्ठा का भाव ही होता है। सच्चा प्रेम तो अधिकतर विवाह में परिणत न होने पर भी अडिग होता है। 'वरदान' उपन्यास में प्रेमचंद जी कहते हैं, "सच्चे प्रेम का कमल बहुधा कृपा के प्रभाव में खिल जाया करता है। जहाँ रूप, यौवन, सम्पति और प्रभुता तथा स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बोने में अकृतकार्य रहते हैं, वहाँ प्रायः उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा वज्र और कठोर नहीं हो सकता जो सत्य–सेवा से द्रवीभूत न हो जाए।" सच्चे प्रेम में स्वार्थ नहीं होता। सच्चा प्रेम पूर्णत निःस्वार्थ होता है। स्वार्थ में ही यह कलुषित होकर अपने विकृत रूप को धारण करता है। प्रेम चंद जी ने अपने साहित्य विशेषतः कहानियों में जो संख्या में काफी कम है इस प्रकार के विकृत प्रेम का अंकन किया है। स्वार्थ, चरित्रता व प्रतिहिंसा को विवेचित करते हुए प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य के सृजन में विकृत–प्रेम का वर्णन किया है।

'दारोगा जी' कहानी में उच्छृंखलता से विकृत–प्रेम का वर्णन किया है। इस कहानी में दारोगा जी की प्रेमिका लैली एक स्वेच्छाचारिणी है। वह मीर और दारोगा जी दोनों को ही एक साथ अपने प्रेमजाल में फँसाए रखती है। वह इतनी व्यवहार कुशल है कि अपने पति के प्रति एकनिष्ठ होने का सफल ढोंग करती है। प्रेमचंद जी को ऐसी नारी असहनीय है। इसलिए वह इस घृणित कार्य को बंद कर तुरंत ही घटनाओं का जाल–सा बुन देते हैं। एक दिन मीर लैली के पास आया हुआ था। उसकी उपस्थिति में अचानक ही दारोगा जी भी आ जाते हैं। भेद खुल जाये के भय से लैली मीर को एक कोठरी में छिपा देती है। दारोगा जी को इसका आभास भी नहीं होता परंतु जब दारोगा जी के होते हुए उसका पति आ जाता है तो वह हड़बड़ाहट में दारोगा जी को भी उसी कोठरी में छिपा देती है जिसमें उसने पहले मीर को छिपाया होता है। दरवाजा खुलने में हुई देरी और भीतर से आने वाला आवाजों से पति को लैली पर शक हो जाता है। लैली का पति कोठरी का दरवाजा तोड़ देता है। दारोगा जी खुद को मीर का साथी बताकर बच निकलते है परंतु लैली का क्रोधित पति मीर की नाक काट देता है। इस प्रकार के विकृत–प्रेम जो स्वेच्छाचारिता से उत्पन्न होता है कि परिणति त्रासदी में ही होती है। यह मात्र मानसिक विकृति की ही उपज होता है। ऐसा ही एक उदाहरण हमें 'ज्वालामुखी' की नायिका में भी देखने को मिलता है। ऐशगढ़ की रूपवती व विलासिनी स्वामिनी विज्ञापनों के माध्यम से रोजगार के भटकने वाले युवकों को सहज की आकृष्ट कर लेती है। वह उन्हें प्रेम–पत्रों के उत्तर लिखने का कार्य देती है। बदले में वह वेतन देती है। इसके साथ–साथ वह उन्हें अपनी काम–वासना की तृप्ति का साधना भी बनाए रखती है। उन्हें पूरी तरह भोगने के बाद वह उन्हें असहनीय कष्ट देने के लिए तहखाने में फिंकवा देती है। कहानी का नायक भी इसके जाल में फँस जाता है कि एक दिन एक वृद्ध उसे तहखाने का दृश्य दिखा देता है। वृद्घ ही सलाह पर वह शीघ्र ही वहाँ से बच निकलने में सफल हो जाता है। यहाँ पर भी लेखक आदर्श की सीमा नहीं लाँघता। नैतिकता व मर्यादा का पालन करता है। यह कहानी प्रेमचंद जी की कल्पना–सृष्टि है। इस कहानी में युवती आधुनिक युवा वर्ग की भोगवादी प्रवृत्ति की प्रतीक है। वृद्ध उसकी अंतरात्मा की प्रतीक है। तहखाना भोगवादी प्रवृत्ति के दुष्परिणाम है। अतः यह कहानी पूर्णतः प्रतीकात्मक है। प्रबुद्ध पाठक इस कहानी से प्रेरणा लेकर भोगवादी प्रवृत्ति से दूर रहकर चरित्र निर्माण कर सकते हैं।

प्रेमचंद जी नारी के प्रति पूर्ण उदार व सहृदय हैं। इसलिए उसकी स्वेच्छाचारिता के लिए युवा वर्ग की भोग–विलास की प्रवृत्ति को दोषी मानते है फिर भी नारियों की इस वृत्ति को प्रेमचंद जी अच्छा नहीं मानते। सच्चे प्रेम में बदले की भावना व प्रति हिंसा के लिए कोई स्थान नही होता। पवित्र व उज्जवल प्रेम तो त्याग, सेवा, निःस्वार्थ व कर्त्तव्यनिष्ठता के भावों से ही पुष्ट होता है। प्रेमचंद जी ने प्रतिशोध व प्रतिहिंसा युक्त प्रेम को अपनी कहानी 'फातिहा' में अंकित किया है। इस कहानी की नायिका अफ्रीदी 'तूरया' पिता द्वारा धन प्राप्त करने के लिए कैद किए गए मेजर हिम्मत सिंह से प्रेम करने लगती है। वह हिम्मत सिंह से उसके संगीत के कारण प्रेम करने लगती है। 'तूरया' का पिता मेजर से धन प्राप्त करना चाहता है परंतु अपेक्षित धन प्राप्त न होने पर वह उसे अंधेरे कुएँ में डाल देता है व जान से मारने की धमकी देता है। अपने प्रेमी की दुर्गति से 'तूरया' बेचैन हो उठती है। मेजर उसे अपने बारे में सब कुछ बता देता है। वह 'तूरया' को बताता है कि उसके दो बच्चे है परंतु वह पत्नी के जीवित होने की बात छिपा लेता है। तूरया को बच्चों की पीड़ा का अहसास होता है। वह अपने पिता से मेजर को छुड़वा देती है क्योंकि वह मेजर से अपने पिता के सामने रूपया भेजने का वादा करवा देती है। मेजर तूरया से उसके पास आने का वादा भी करता है परंतु तीन वर्ष तक न लौटने पर भी जब वह काबुली और के वेश में उसके पास निकाह के लिए कहने जाती है तो उसे पत्नी के साथ देखकर क्रोध व प्रतिहिंसा से भर उठती है। वह उसकी पत्नी की हत्या कर देती है। वह कहती है "अब पहचान ले, मैं तूरया हूँ। मैं आज तेरे घर में रहने के लिए आई थी। मैं तुझसे विवाह करती और तेरी होकर रहती। तेरे लिए मैंने बाप, घर, सब–कुछ छोड़ दिया था, लेकिन तू झूठा है, मक्कार है। तू अब

अपनी बीवी के नाम को रो, मैं आज से तेरे नाम को रोऊँगी।"[2] मेजर उससे अनेक प्रकार से अनुरोध करता है परंतु वह उसके अनुरोध को अस्वीकार कर देती है। प्रेमचंद जी ने नारी की इस प्रतिहिंसा के लिए पुरुष के विश्वासघात को ही उत्तरदायी माना है। नारी जहाँ प्रेम के लिए अपना सर्वस्व लुटाने को तत्पर हो जाती है वहाँ वह असत्य–भाषण व विश्वासघात के लिए पुरुष का सर्वस्व लूटने की क्षमता भी रखती है। तूरया मेजर के बच्चों को पूर्ण ममता देती है परंतु मेजर के प्रणयानुरोध को पूरी दृढ़ता से ठुकरा देती है। प्रेम पवित्र व उच्च आदर्शों से युक्त होता है। इसमें स्वार्थ का कोई स्थान नहीं। जब प्रेम में स्वार्थ की कुलपित वृत्ति प्रविष्ट हो जाती है तो यह विकृत हो जाता है। अपने किसी स्वार्थ को सिद्ध करने वाली स्त्रियाँ प्रेम को विफल व विकृत बना देती है। प्रेमचंद जी प्रेम में किसी भी प्रकार का स्वार्थ या अनुबंध स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार तो प्रेम का बीज एक बार हृदय में पड़ जाने पर बिना जल, वायु या प्रकाश के बढ़ता ही जाता है। विपरीत परिस्थिति में तो प्रेम का अंकुर बड़ी ही तीव्र गति से बढ़ता है। प्रेमचंद जी ने इस प्रकार के प्रेम से दूर रहने की सलाह प्रबुद्ध पाठकों को दी है। इस प्रकार के विकृत प्रेम को लेखक ने 'कैदी' कहानी में अंकित किया है। इस कहानी की राष्ट्रभक्त, संगीत प्रेमी नायिका हेलेन मास्को के समृद्ध व शराब और सुंदरियों में डूबे रहने वाले युवक से प्रेम करती है। भिन्न रूचियाँ भी उनके प्रेम में बाधा नहीं बन सकी। हेलेन अपने प्रेम से प्रेमी को भी राष्ट्रभक्त व राजनीतिक संग्राम में भाग लेने वाला बना देती है। वह उक्रायेन प्रांत के अत्याचारी, अन्यायी व आंतकवादी गवर्नर रोमनाफ की हत्या करने के लिए स्वयं उससे प्रेम का अभिनय करती है और ऐसे ही समय में आइवन द्वारा उसकी हत्या करने की योजना बनाती है। वह आइवन को इसके लिए तैयार भी कर लेती है। जब उसका अभिनय वास्तविक प्रेम का रूप ले लेता है तो वह रोमनाफ को हत्या वाले स्थान से हटाने का प्रयास भी करती है किंतु इसमें सफल नहीं हो पाती। आइवन को रोमनाफ की हत्या के प्रयास में असफल रहने पर गिरफ्तार कर लिया जाता है। हेलेन रोमनाफ से विवाह कर उसके साथ रहने लग जाती है परंतु वह आइवन को याद करती रहती है। कारावास से मुक्त होकर जब आइवन हेलेन को उसके किए की सजा देने पहुँचता है तो उसकी अर्थी सजी मिलती है। रोमनाफ द्वारा हेलेन के पश्चाताप की बात सुनकर वह उसे क्षमा करके स्वयं भी प्राणों का उत्सर्ग कर देता है। 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' की नायिका दिलफरेब अपने प्रेमाकांक्षी युवक दिलफिगार को दुनिया का सबसे अनमोल रतन लाकर देने पर ही अपना प्रेमपात्र बनाना स्वीकार करती है। दिलफिगार द्वारा लाए गए सभी उपहार उसके लिए निरर्थक होते हैं। अंत में भारत भूमि की रक्षा करते हुए वीरगति पाने वाले वीर के रक्त की अंतिम बूँदे लाने पर ही वह उसे अपना प्रेम–पात्र बनाती है और उसकी मलिका बनने को तैयार होती है। "मैं उस धर्मवीर की ब्याहता हूँ, जिसने हिंदू जाति का मुख उज्जवल किया है। तुम समझते हो कि वह मर गया। यह तुम्हारा भ्रम है। वह अमर है। मैं इस समय भी उसे स्वर्ग में बैठा देखती हूँ।"[3] वह एक तख्ती पर लिखवाकर टाँग देती है, "खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे, दुनिया की सबसे अनमोल चीज है।"[4], "आज से तू मेरा मालिक है और मैं तेरी लौंडी।"[5] इस प्रकार का प्रेम नायिका का अनुबंधित प्रेम है। यह नायक में किसी विशेष अनुबंध को पूर्ण करने पर नायिका उसकी होना स्वीकार करने पर पूर्ण होता है। प्रेम चंद जी को अनुबंधित प्रेम भी स्वीकार्य नहीं है।

'जिहाद' कहानी की श्यामा स्वस्थ व सुंदर धर्मदास से प्रेम करती है। कृशकाय खजान चंद को पति के रूप में स्वीकार नहीं कर पाती। पठानों से घिर जाने पर स्वस्थ धर्मदास द्वारा धर्म परिवर्तन को स्वीकार करने पर वह उससे विरक्त हो जाती है। कृशकाय व क्षीण खजानचंद द्वारा धर्म परिवर्तन स्वीकार न करके पठानों से लड़कर मर जाने पर वह उसी की विधवा के रूप में जीवन जीने का संकल्प करती है परंतु धर्मदास के परिणय–निवेदन को कठोरतापूर्वक अस्वीकार कर देती है। धर्मदास आत्महत्या कर लेता है। अनुबंधित होने के कारण ही यह प्रेम असफल होता है। 'नया विवाह' कहानी की नायिका आशा पौरुषहीन वृद्ध डेंगामल से उनकी सम्पति के कारण विवाह करती है किंतु अपनी कामवासना की तृप्ति महाराज के सुंदर युवक पुत्र जुमल से करती है। अतः यह प्रेम का विकृत रूप है। 'मेरी पहली रचना' की चम्पा का प्रेम भी धन के कारण है। अविवाहित मालिक की कामवासना की पूर्ति के लिए वह प्रेम का नाटक करती है और धन व आभूषण ऐंठती रहती है। अतः धनाभाव के कारण किया गया यह प्रेम भी लेखक की दृष्टि में विकृत है। 'सती' कहानी की नायिका की शर्त है, "मेरा हृदय उसी पुरूष–सिंह के चरणों पर अर्पित हो सकता है जो प्राणों की बाजी खेल सकता हो।"[6] वह ऐसा पुरुष न मिलने पर आजीवन ब्रह्मचारिणी रहने की प्रतिज्ञा करती है। अपनी सेना के एक बुंदेला योद्धा रत्न सिंह की वीरता से वह प्रभावित होती है। रत्न सिंह भी उसके प्रति प्रेम का भाव रखता है परन्तु दोनों में से कोई भी इसके एक–दूसरे के प्रति व्यक्त नहीं कर पाते। चिंता देवी को मारने आए तीन व्यक्तियों को रत्न सिंह अकेला ही मार गिराता है और स्वयं भी घायल हो जाता है। घायल रत्न सिंह की सेवा कर चिंता देवी उसे स्वस्थ कर लेती है और उसे पति के रूप में स्वीकार कर लेती है। बाद में वह रत्न सिंह में उन गुणों का अभाव पाने पर चिता में जलकर सती हो जाती है। उसी चिता में रत्न सिंह भी जलकर अपने प्राण दे देता है।। इस प्रकार यह अनुबंधित प्रेम भी प्रेमचंद जी ने विफल ही दिखाया है। प्रेम किसी भी प्रकार की शर्तों में नही बांधा जा सकता।

'शेख मखमूर' कहानी की नायिका किसी साहसी, ईमानदार व जवान मर्द से विवाह करने के लिए कुछ शर्ते रखती है। मसऊद उसके प्रश्नों के पुरुषोचित उत्तर देता है परंतु अंत में गिरफ्तार कर लिया जाता है। मलिका को उससे प्रेम हो जाता है। अंत में मलिका कहती है, "मसऊद मैं एक नाचीज तोहफा तुम्हारे लिए लाई हूँ और वह मेरा दिल है।"[7] प्रेम चंद जी किसी भी प्रकार से असामाजिक प्रेम को उचित नही मानते। प्रेम के सामाजिक संदर्भ को वे बखूबी जानते हैं। जाति, धन, धर्म, दूषित सामाजिक व्यवस्था, रूढ़ि, अंध विश्वास आदि प्रेम की विफलता का मूल मानते हुए उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से इस प्रकार के प्रेम–संबंधों से यथासंभव बचने की सलाह पाठकों को दी है। इस प्रकार के प्रेम–संबंध अन्ततः विफल ही होते हैं। उन्होंने अपने साहित्य में स्वार्थ, सेवारहित, त्यागरहित, प्रतिशोधयुक्त या प्रतिहिंसा युक्त व अनुबंधित प्रेम को विकृत प्रेम के रूप में विफल ही अंकित किया है। जहाँ प्रेम के विवेचन का जाति–भेद, धार्मिक संकीर्णता, अंधविश्वास आदि संकीर्णताओं से संबंध कर दिया वहाँ मुख्य प्रतिपाद्य ही अधिक उभरा है। अंत प्रेम चंद जी ने अपने साहित्य में प्रेम के सात्विक रूप या आदर्श रूप का अंकन किया है, वहाँ एकनिष्ठता के अभाव तथा त्याग, बलिदान, कर्तव्यनिष्ठा के भाव की अपेक्षा स्वार्थ के भाव के कारण प्रेम के विकृत रुप का भी यथेष्ठ वर्णन किया है। प्रेम चंद जी प्रेम के विकृत रूप का वर्णन करने में पूर्णतः सफल हुए है।

संदर्भ

1. प्रेमचंद, वरदान, पृष्ठ – 85
2. प्रेमचंदः मानसरोवर भाग 7, पृष्ठ–167

3. प्रेमचंदः मानसरोवर भाग 7, पृष्ठ–154
4. प्रेमचंदः गुप्तधन भाग–1, पृष्ठ–9
5. प्रेमचंदः गुप्तधन भाग–1, पृष्ठ–8
6. प्रेमचंदः मानसरोवर भाग 5, पृष्ठ–69
7. प्रेमचंदः गुप्तधन भाग–1, पृष्ठ–22